बिन्ते हव्वा

एक संजीदा तहरीर

अज़:
कनीज़े अख़तर

عبد مصطفی
AM ABDE MUSTAFA

बिन्ते ह़व्वा

कनीज़े अख्तर

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

TO KNOW ABOUT US

Search Abde Mustafa Official on Internet

AMO

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

And find us on social media networking sites

बिन्ते हव्वा

एक औरत की पैदाइश :

अहम्दुलिल्लाह मै एक मोमिन घराने मैं पैदा हुयी और इस बात के लिये मै अल्लाह का जितना शुक्र करूँ कम है, क्यों ना शुक्र करूँ?
अल्लाह अगर चाहता तो मुझे किसी काफिर के घर पैदा कर सकता था,
लेकिन मुझे मेरे रब ने मोमिन वालिदैन के घर पैदा फ़रमाया,
अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह
जैसे ही मै पैदा हुयी मेरे वालिदैन ने सब से पहली जो आवाज़ सुनायी वो उस वहदहू ला शरीक का ज़िक्र था यानी मेरे मोमिन वालिदैन ने अज़ान दिलवायी।

अब शुक्र का मक़ाम ही तो है ना?
अभी बच्चे ने माँ बाप को नहीं देखा,
उस वहदहू ला शरीक की वहदानिय्यत का ऐलान सुन लिया।
क़ुरबान सद हा क़ुरबान।

ऐसा मोमिन घराना और ऐसे ईमान वाले वालिदैन.....
सुब्हान अल्लाह..
इस के बाद मुझे माँ बाप ने देखा।
मै क्यों ना फख्र करूँ कि अल्लाह ने मुझे अपने हबीब की उम्मत में पैदा फ़रमाया है।
सुब्हान अल्लाह

औरत का मक़ाम :

अल्लाह के हबीब ने हमें वो ऊँचा मर्तबा दिलवाया, वो मर्तबा कि बाबा के लिये रहमत,
भाई का गुरूर,
शौहर के दिल का सुकून,
बच्चों के लिये जन्नत।
क्या ये मेरे अल्लाह का अहसान नहीं?
बहुत बड़ा अहसान है।
फिर क्यों ना इस्लाम की मुक़द्दस शहज़ादियाँ अपने ऊपर नाज़ करें?

मक़ामे गौर :

अब मक़ामे गौर कि क्या हम सच में इस्लाम के दिये हुये मक़ाम व मर्तबे को पहचान रहे हैं?
क्या हमें इस्लाम ने जो ज़िम्मेदारी दी है उस को निभाने की कभी कोशिश की है?
क्या हुआ? हम कौन हैं? कभी खुद से पूछा?
अगर हम पूछें तो हमें जवाब ज़रूर मिलेगा लेकिन हमें इतनी फुरसत नहीं!

ए मेरी इस्लाम की मुक़द्दस शहजादियों! हम पे बहुत बड़ी जिम्मेदारियाँ हैं, इन्हें निभाने का वक़्त अब आ गया है। ज़रा खुद पे भी गौर करें।

अल्हम्ददुलिल्लाह मै अल्लाह की एक खूबसूरत तख्लीक़ हूँ।
अल्लाह ने मुझे अपने नबी की पसली से बनाया है।

मै क़ुदरत का एक नायाब तोहफ़ा हूँ। लेकिन ज़माने के खुदाओं ने मेरा वो हश्र किया कि आप ने तारीख़ का मुताला किया होगा।
मुझे क्या से क्या बना दिया..!

अल्लाहु अकबर! ज़्यादा पीछे जाने की ज़रुरत नहीं बस इस्लाम से पहले का ही मेरा हाल देख लें।
इस्लाम से पहले मेरी कोई अपनी पहचान ही नहीं थी।
कोई मुझे जिंदा दरगोर कर रहा था तो कोई मेरे साथ जानवर से भी बदतर सुलूक कर रहा था।
अल्लाहु अकबर

बेटी ज़िन्दा दरगोर, बीवी के साथ गुलाम से भी ज़्यादा बदतर सुलूक और माँ का तो पूछो ही मत....!
यहाँ बाप मर गया वहाँ मेरा सौदा किया जाता, चाहे तो मुझे बाप के विर्से रख लेते थे नहीं तो मेरा सौदा कर लेते!
अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर....

क्या तमाशा था मेरे वजूद का....
क़ुरबान जाऊँ दीने इस्लाम के हर एक हुक्म पर कि किस तरह मुझे मेरे वक़ार व इज़्ज़त को वो मक़ाम दिया कि रहती दुनिया तक इस को नहीं बदल सकता।
फिर में क्यों ना अपने मुसलमान होने पे फख्र करुँ? नाज़ करुँ! क्यों ना अल्लाह के हबीब के बयानकर्दा उसूलों और क़वानीन को अपना निस्बुल ऐन बना लूँ।

मै इस के हर हुक्म और क़ानून पर सद दर्ज़ें क़ुरबान क्यों ना रहूँ?
क्यों के यही वो दीन है जिस में अल्लाह के हबीब ने फ़रमाया है :

हदीस :

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है कि जिस के यहाँ बेटी पैदा हो और वो उसे ईज़ा ना दे और ना बुरा जाने और ना बेटे पे फज़ीलत दे तो अल्लाह त'आला उस शख्स को जन्नत में दाखिल करेगा।
(अल-मुस्तदरक)

इतना ही?

अल्लाह के हबीब ने ये अमल बताया ही नहीं बल्कि बेटी के साथ निभाया भी है।
इस का सुबूत कई हदीसों से साबित है!
जब कभी हज़रते फ़ातिमा ज़हरा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा काशाना -ए-हबीब पे तशरीफ लाती तो अल्लाह के हबीब इन के इस्तिक़बाल के लिये खुद तशरीफ लाते!
बीबी फ़ातिमा का माथा चूमते, बे तहाशा मुहब्बत फ़रमाते...!
सुब्हानअल्लाह सुब्हानअल्लाह....

अल्लाह के हबीब ने यहाँ तक कहा है कि मेरी फ़ातिमा मेरे कलेजे का टुकड़ा है।
क़ुरबान जाऊँ मेरे दीने इस्लाम पर कि अल्लाह ने इस मज़हब में मुझे पैदा फ़रमाया।

वो बेटी किया बेटी थी, इस बेटी ने अपने बेटी होने का पूरा-पूरा हक़ अदा किया।
ये है सरदारे अम्बिया की बेटी, जन्नती औरतों की सरदार, घर के सारे काम खुद अपने हाथों कर रही हैं।
इन के गुलाम तरह-तरह की नैमतें खा रहे हैं और ये पानी पे गुज़ारा कर के भी शुक्र अदा कर रही हैं...!

अल्लाह, अल्लाह! बिन्ते रसूल....
सब्र, शुक्र, सखावत, तक़्वा, परहेज़गारी ये सब अल्फाज़ बीबी फ़ातिमा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा के आगे छोटे लगते हैं!

इस बेटी ने दुनिया को ऐसी मिसाल दी है कि रहती दुनिया तक कोई ऐसी मिसाल क़ायम कर ही नहीं सकता!
कभी वक़्त मिले तो हम गौर करें कि इतना उँचा मक़ाम व मरतबा हमें इस्लाम ने दिया! क्या हमने इस पर कभी गौर किया है?
मै आप को यक़ीन के साथ कहूँगी कि ऐसा दर्जा औरत का आप को किसी भी मज़हब में नहीं मिलेगा।
कभी तो हम अपने हालते ज़ार पर रहम करें।
आज बाबा के घर की बेटी, भाई की गैरत,
अम्मी के आँखों की ठंडक, आज मै बेटी ही हूँ, अभी मुझे ज़िन्दगी के बहुत मरहले तय करना हैं।
क्या मै तैय्यार हूँ.....!

मै कौन और कहाँ?

इस्लाम ने मुझे अपने मुस्तक़बिल को सँवारने के लिये इतनी वसी और रौशन तालीमात फराहम की है, क्या मै इन को अपना रही हूँ?
बस मुझे आगे बढ़ना है। ये आगे बढ़ने की चाह मुझे दुनिया के दलदल में फँसा रही है। बस मै फँसी जा रही हूँ।
मै आज इस क़द्र दुनियावी उलूम हासिल करने के बाद भी खाली हाथ ही हूँ।

मै बाबा की जान, माँ की आँखों की ठंडक, वालिदैन के घर की मलिका, अपने ही मन की करने वाली, कभी-कभी माँ अहसास दिलाने की कोशिश कर रही है पर मै इस बात को मज़ाक़ में ले रही हूँ।
माँ ज़िंदगी के तजुर्बे से अनकही बात से समझाने की कोशिश कर रही है और मै समझ ही नहीं रही हूँ।
हर काम में अपनी ही मनमानी।

ऐसी लाडो हूँ मै,
अपने बाबा के घर की राहते जान,
कल की कुछ फ़िक्र नहीं, बस अपने बाबा की सल्तनत की राजकुमारी।
बाबा मेरी हर ख्वाहिश पर अपनी जान न्यौछावर कर रहे हैं,
मुझे आला से आला तालीम दिलाने के लिये परेशान हैं!
अपनी हर ख्वाहिश, मेरे ख्वाबों को पूरा करने के लिये क़ुरबान कर रहे हैं।
मै मेरे ख्वाबों को इन की आँखों में ज़िन्दा ताबीर होते देखती हूँ।
इस बेटी को अपनी असलिय्यत की भी पहचान ही नहीं है।

डिग्री पे डिग्री हासिल कर रही है। माँ कोशिश कर रही है कि अस्ल बात को सीधे सीधे लफ्ज़ों में कहूँ लेकिन बेटी की कामियाबी को देख कर खामोश है।

लेकिन एक बेटी चाहती है खुल कर कहे कि ज़िंदगी के लिये सिर्फ डिग्री ही नहीं, तहज़ीब भी चाहिये और वो तहजीब व तमद्दुन सिर्फ और सिर्फ हमें तालीमाते क़ुरआन से ही हासिल होता है।

सिर्फ एक बच्ची नहीं :

हम यह समझते हैं कि अभी बच्ची है।

नहीं नहीं इस बच्ची की गोद में कल की नस्ल परवान चढ़नी है। आज ही इस बच्ची को ऐसी मज़बूत बनाओ कि कल इस की गोद में जो नस्ल परवान चढ़े वो हालात का रुख मोड़ने वाली औलाद हो।

ये बेटी मामूली बेटी नहीं है, इस की गोद में क़ौम व मिल्लत के जौहर पल रहे हैं जो कल एक मिसाल बनेंगे।

मुझे ऐसी तालीमात मिलनी चाहिये लेकिन नहीं मुझे माँ बाबा तेज़ धूप से बचाते हैं, मुझे चलने के लिये साफ शफ़ाफ ज़मीन हमवार करते हैं, कभी तकलीफ को मेरे करीब आने नहीं देते।

वो जानते हैं कि उन की शहज़ादी परायी हैम कल किसी के घर की ज़ीनत बनेगी फिर भी सारे जहान की खुशियाँ इसके कदमों पे न्यौछावर करने के लिये दिन रात ख्वाब देखते है..

मेरे वालिदैन ने मेरी फिक्र में :

वो मुझे एक अलग ही म्यार पर देखना चाहते है। इस म्यार पर पहुँचाने के लिये दुनिया से मुक़ाबला करने लगे। मुक़ाबला करते करते इस्लामी तालीमात से ही दूरी हो गई। अल्लाहु अकबर!
मै इस्लाम की बेटी हूँ, बेटी को अपनी ज़िन्दगी की हर जंग खुद अकेली लड़नी पड़ती है, चाहे ऐतबार की हो या किरदार की।

मै इसीलिए पैदा नहीं की गई:

मेरा म्यार ही जुदा है लेकिन दुनिया हासिल करने मे सर्फ कर दिया है। बेटी के लिये मेरे दीन इस्लाम ने बहुत बड़ा दर्जा रखा है।
आह..! मैने शायद बेटी बन कर इस्लामी म्यार पर चलने की कोशिश ही नहीं की।कोई गैर देखे रश्क करे लेकिन खुद पर मुझे शायद अफसोस हो रहा है।

क्या शान है इस्लाम में बेटी की लेकिन मेरी अपनी ज़िंदगी में इस्लाम शायद बस मेरे नाम तक ही महदूद है। ना इल्म, ना अमल में।
अभी मै बेटी ही हूँ, मुझे खुद पर भी गौर करना ज़रूरी था। माँ बाबा की बेपनाह मुहब्बत ने ये समझने ही नहीं दिया कि इस्लामी की बेटी एक ज़िम्मेदार बेटी है..

तालीमाते इस्लाम :

अगर सच में बचपन में ही तालीमे इस्लाम से वाक़िफिय्यत हासिल होती तो बाबा को भी वो क़ौमो मिल्लत का रहनुमा बना सकती है। भाई के हाथों को ज़ुल्म के खिलाफ तलवार उठाने में मदद कर सकती है। अल्लाह ने औरत के

अंदर वो फितरी खुबियाँ रखी हैं जो एक वक़्त में हालात बदल सकती हैं। लेकिन तब ही ये बात हो सकती है जब इस इस्लाम की मुकद्दस शहज़ादी को तालीमे इस्लाम मिले।

लगता है खुदा की ज़ात पर भरोसा नहीं, आगे की जिंदगी कैसी होगी ? मालूम नहीं इसलिये इस बेटी को दुनिया की डिग्री पे डिग्री दिलवा रहे हैं और वो भी एक अन-देखे मुस्तक़बिल के लिये ! अरे अगर हम दीन की तालीम दिलवायेंगे तो सच में इस्लाम की ये बेटी दुनिया के हर हालात का मुकाबला बा-खुबी करेगी।

हम अपने अस्लाफ पे नज़र करें तो बेशुमार इस्लाम की बेटियों की मिसालें हमें मिलेगी। अब जब मै दुनियावी तौर पर एक अच्छे मकाम पर पहुँची हूं। अब मेरे माँ बाबा की अलग फिक्र...

एक मोड़:

अब मेरे माँ बाबा को लगता है कि उन्होंने मुझे एक अच्छे और मज़बूत मक़ाम पर पहुँचाया है। अब इन्हें एक आला म्यार के रिश्ते की तलाश है। वो हर मुम्किन कोशिश कर रहे है....!

कभी-कभी फ़िक्र व परेशानी के आलम में उन्हें डूबा देख कर ना जाने एक अजीब सा खालीपन महसूस करते हुये मुझे अब खुद पे गौरो फ़िक्र करने का मौक़ा मिल रहा है.....!

मै मेरे माँ बाबा के लिये रहमत हूँ कि ज़हमत, तजस्सुस अब ज़ोर पकड़ने लगी है.....!

यही गौरो फ़िक्र मुझे मेरे रब से जोड़ रहा है। इतनी दुनिया की तालीमात मुझे वो सहारा नहीं दे रही है जो अल्लाह के लिये किया गया एक लम्हा -ए- फ़िक्र मुझे सहारा दे रहा है। खुद पे गौरो फ़िक्र मुझे बहुत कुछ अन्जाने में सिखा रहा है! खैर उन का ख्याल है जैसा मुझे हमसफर चाहिये उन्हें लगता है मुझे वैसा ही हमसफर मिल गया है लेकिन अब इस इस्लाम की बेटी के अन्दर एक अलग इन्क़िलाब बरपा हो गया है।

मै बदल रही हूँ :

ये दुनियावी म्यार, आला दर्जा, मक़ाम व मर्तबा मुझे शायद इन बातों से चिड़ महसूस होने लगी है। खैर जो अल्लाह की चाह वही इस इस्लाम की बेटी की चाह।

एक फ़िक्र :

इस्लाम ने रिश्ता जोड़ने के लिये किस बात को तरजीह दी है?
दौलत को, खानदानों को, मक़ाम, मर्तबा को या दीनदारी को, अख्लाक़ को...?
एक लड़की के लिये बस एक माज़ूर व मालदार लड़का ही चाहिये....? क्या एक अख्लाक़ वाले को मालदारी पे तरजीह नहीं दी जायेगी....? क्या मालदार लड़का ही ज़िंदगी में कामियाब होगा...? क्या कामयाबी दौलत व सरवत ही कमाने का नाम है...? दीनदारी के साथ सुकून के साथ बसर होने वाली ज़िंदगी कामियाब ज़िंदगी नहीं है....?हमें ये सवाल अपने आप से करने होंगे। इस्लाम ने निकाह कितना आसान किया और हमारी ना खत्म होने वाली ख्वाहिशात ने इस को कितना मुश्किल किया है....!

निकाह :

जब तुम अपनी लड़की या लड़के का निकाह करो तो इन बातों को अहमिय्यत दो।

मफहूमे हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है ये चार चीज़ें देखी जाती हैं :

(1) दौलत मन्दी
(2) खानदानी शराफत
(3) खूब सूरती
(4) दीनदारी

लेकिन तुम दीनदारी को इन सब चीज़ों पर समझो यानी तरजीह दो।
(बुखारी, मुस्लिम व मिश्कात जिल्द 2, सफहा नम्बर 228)

लेकिन आज हम सिर्फ और सिर्फ मालदारी को ही तरजीह दे रहे हैं!
तो बताओ इस निकाह में कहाँ से बरकत आयेगी?
बरकत के लिये निकाह कर रहे हैं तो दीनदारी को तरजीह दें।
इसलिये शादी से पहले शादी के सारे हुक़ूक़ का इल्म होना अफ़ज़ल है।
खैर जिस मुआशरे से मै वाबस्ता हूँ इस में ये सब कहाँ?

मै बाबा के घर के आँगन के बाग की आज़ाद चिड़िया थी।
अब मै किसी के दिल का सुकून, किसी की ज़िम्मेदारी बनने जा रही हूँ।
अब तक बेटी थी और अब बीवी। घर की ज़ीनत, किसी के माल व औलाद की हिफाज़त करने की ज़िम्मेदारी बनने जा रही हूँ।

बहुत से सवालात दिलो दिमाग को परेशान कर रहे हैं।
एक अन्जान खुशी कहूँ या खौफ़? समझने में मुझे बहुत मुश्किल हो रही है।

एक आम सी लड़की की तरह मै खुश क्यों नहीं हूँ?
ये सवाल मै खुद से कर रही हूँ।
वालिदैन बहन भाइयों की खुशी देख कर उनसे कहीं ज़्यादा खुश होने का अहसास दिलाने की कोशिश कर रही हूँ।
दुनिया की तालीमात से लबरेज़ सभी दुख्तराने इस्लाम को मै एक फ़िक्र देने की कोशिश कर रही हूँ।

क्या हम सच में एक कामियाब ज़िंदगी का ख्वाब बस एक आला तालीम याफ्ता शौहर ही चाहती हैं या कामियाबी का मतलब कुछ और है?
ज़िन्दगी तो काफ़िर भी इसी तरह जी रहे हैं।
क्योंकि कामियाबी का मतलब वो भी नहीं समझते हैं।

क्या दुख्तराने इस्लाम की ख्वाहिश बस इतनी सी बन कर रह गयी है?
एक महल नुमा घर की क़ैद ज़ेवरात की ज़ंजीरों में मुक़य्यद बन कर रहना ही कामियाब ज़िंदगी है?
या वो कुछ और चाहती हैं?
इस्लाम ने इस निकाह के मुआमलात में कहने का हुक्म दिया है।

इस पर गौर करना आज इस्लाम की मुक़द्दस शहज़ादियों के लिये ज़रूरी है

निकाह की बात बढ़ती है :

खैर निस्बत तय पाने के बाद एक गैर शरई रस्म को इस मुआशरे ने अपने ऊपर फ़र्ज़ कर लिया है। मंगनी अ़क़्ल वालों के क़रीब बहुत ही वाहियाना रस्म है जो एक बे-हयाई का मज्मूआ है।

वो बाबा जो अपनी बेटी को हमेशा दुनिया की नज़रों से बचाया करते, कोई गलत नजरों से देखे तो उसकी आँखों को निकाल कर उसी के ही हाथ में दे दे, ऐसी हिम्मत रखने वाले वो भाई जो अपनी बहन की तारीफ़ किसी से सुने तो अपनी गैरत का जनाज़ा महसूस करते। आज यही बाबा और भाई एक गैर शरई रस्म में खुद मुन्हमिक हो कर निस्बत तय के यक़ीन दहनी का ढिंढोरा पिटवा कर अपने घर की इज़्ज़त का तमाशा बना कर गैरों की नजरों का मरकज़ बन रहे हैं। एक तो शरीअ़त में इसकी कोई अस्ल है ही नहीं (ज़्यादा से ज़्यादा निकाह के वादे को मंगनी कह लीजिये पर आज कल तो मंगनी ने पुराने निकाह को पीछे छोड़ दिया है यानी इस क़द्र मुबालिगा और खर्च कि निकाह हो जाये।)

सिर्फ आप की बेटी की निस्बत तय पाई है निकाह नहीं हुआ। वो आप की लड़की के लिये ना महरम ही है।

मंगनी की गैर शरई रस्मों में अपने घर की इज़्ज़त व गैरत की धज्जियाँ उड़ाने के लिये सजा सँवार कर उस के सामने पेश किया जा रहा है। अभी भी आपकी लड़की के लिये हलाल नहीं है, जब तक निकाह ना हो। उस का आप की

लड़की को देखना, छूना, बात करना नाजाइज़ नहीं बल्कि हराम है। (ये अलग सी बात है कि एक नज़र देख सकता है पर इस का भी कोई तरीक़ा है और कोई हद होती है।)

उसे तमाम घर वाले माँ-बाबा, भाई बहनें सजा सँवार कर स्टेज पर खड़ा करते हैं। (वलीमा की तक़रीब में ऐसा देखने को मिलता है) यहाँ किसी को शायद बुरा लगे पर लड़के के दोस्तों और फ़ोटो, वीडियो ग्राफर की नज़रों की प्यास बुझाने का ज़रिया बना कर खड़ा किया जाता है।
अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर...!

ये क्या तमाशा है?
वालिदैन के लिये एक गौर करने का लम्हा, कहाँ गयी बाबा की इज़्ज़त? कहाँ गयी भाई की गैरत? कहाँ गये वो मुआशरे की तहज़ीब व तमद्दुन के ठेकेदार, जो बात-बात पर नुक़्ता चीनी कर के मुआशरे में अपनी गैरत का मुहाज़िरा करते फिरते हैं? इस मुआमले में अब खामोशी इख्तियार क्यों किये हैं?
हम कहाँ जा रहे हैं? क्या ये मक़ामे गौर नहीं गैरत मंदों के लिये?

निकाह आसान है :

इस्लाम ने निकाह को बहुत ही आसान किया है और पाकीज़ा तरीक़ा बयान किया है लेकिन हमने तो मंगनी में ही बेहयाई की कोई क़सर नहीं छोड़ी। निकाह को ज़ी-शऊर सुने तो कितनी पाकीज़गी महसूस करे लेकिन चंद

अरमान के मारों ने निकाह जैसे पाकीज़ा रिश्ते का नक़्शा ही बदल कर रख दिया है।
आज निकाह में अरमान के नाम पर ना जाने कितने हराम काम हम से सादिर हो रहे हैं, कभी हम ने गौर किया है?
सोचा कि कितनी नमाज़ें क़ज़ा हुयीं?
कितनी बे-पर्दगी?
कितनी बद-निगाही हो रही है?
कोई तो दर्द महसूस कीजिये!
हम एक मुक़द्दस रिश्ता बनाने जा रहे हैं, वो भी अल्लाह और उस के हबीब को नाराज़ करके, तो फिर कैसे इस रिश्ते में बरकत नाज़िल होगी?

किसी को कोई अहसास है कि सब दुनिया और गैर मज़हबी रंग में मस्त होकर अपने अपने अरमान पूरे कर रहे हैं।

एक ये भी :

मेहंदी अब दुल्हन की कोई सहेली नहीं बल्कि मेहंदी डिज़ाइनर! अरे वो भी मर्द लोग! अल्लाह अल्लाह कहाँ मर गयी घर के मर्दों की गैरत?

क्या कर रहे हो, थोड़ा तो शर्म महसूस कीजिये।
कैसे नाज़िल हो इस जोड़े पर अल्लाह की रहमतें।

और भी बाते हैं :

अब हल्दी के नाम पर भी इन्तिहाई वाहियाना रस्म होती है।

क्या मर्द और क्या औरतें, दुल्हन के साथ साथ एक दूसरे को हल्दी ही नहीं बल्कि पानी से नहलाते फिरते हैं और हँसी मज़ाक़ के नाम पर कुछ नहीं बहुत कुछ होता है।
पानी से शराबूर औरत के हर आज़ा (Part) का बा-आसानी जाइज़ा लिया जा सकता है।
यहाँ तो बेहयाई की इन्तिहा हो गयी।

मालूम है कि औरत को किन-किन लोगों से पर्दा करना फ़र्ज़ है?
जेठ, देवर, बहनोई, खाला ज़ाद, मामू ज़ाद, फूफ़ी ज़ाद।
इनसे बे-पर्दगी नहीं और ना जाने कितने गैर होंगे जिनकी गिनती ही नहीं कर सकते हम
एक पाकीज़ा निकाह जो अल्लाह त'आला की बरकतें, रहमतें, सलामती नाज़िल हिने का ज़रिया है उस को हमारे अरमानों ने बे-हयाई का मज्मूआ बना कर छोड़ा।
एक बा-शऊर मोमिन वालिदैन अपने मक़ाम व मर्तबे को पहचान कर गौर व फिक्र ज़रूर करें कि अल्लाह ने औरत के लिये क्या हुक्म सादिर किये हैं, क्या फ़रमाया है क़ुरआन में अल्लाह त'आला ने।

अल क़ुरआन : अपने घरों पर ही ठहरी रहो, बे-पर्दा ना निकलो, ज़माना -ए-ज़ाहिलिय्यत की औरतों की तरह।

यहाँ तक है कि तुम्हारा बनाव सिंगार ना ज़ाहिर हो।

हमारे मुआशरे की शादियाँ और बनाव सिंगार?

अल कुरआन : अल्लाह आँखों की खयानत को जानता है और उसे भी जो सीने में छुपाते हैं।

गौर करने वाली बात है जब कोई मिठाई का डब्बा खुला छोड़ कर ये उम्मीद रखे कि कोई मक्खी इस पर ना बैठे, ये कम अक़्ली ही है ना? जितना ज़्यादा मीठा उतनी ही ज़्यादा मक्खियाँ।

हर मर्द अपनी आँखों को किसी की अमानत में में खयानात ना करने से रहा। यहाँ खुले आम खयानत करने की दावत दी जा रही है।

ए मेरे इस्लाम की मुक़द्दस शहज़ादियों! तुम उस दीन की मानने वाली हो जिस में :
बेटी हो बाबा मुहाफिज़,
बहन हो भाई मुहाफिज़,
बीवी हो शौहर मुहाफिज़
और तो और माँ हो तो बेटा मुहाफिज़।

हदीस है : औरत, औरत है जो कि छुपाने वाली चीज़ है।
औरत जवान हो या बूढ़ी इस को हर ज़माने में हिफाज़त करने की ज़रूरत होती है। ये बेहूदा रस्मों को खत्म करके इस्लाम ने जो बा-बरकत आसान निकाह की तल्क़ीन की है इस को अपना कर अपने बच्चों की ज़िन्दगी को कामियाब

बना कर एक ऐसी बा बरकत नस्ल को परवान का ज़रिया बनायें जो इस्लाम के तहफ्फुज़ के लिये अपने आप को क़ुरबान करने में ज़रा भी गुरेज़ ना करे।

आगे आओ सही सुन्नत के मुताबिक़,
निकाह करें, हम भी अपनी औलाद भी खुश।
आओ आज हम एक नया इन्क़िलाब बरपा करें, इन बे अस्ल रस्मो रिवाज के खिलाफ़।

ये तभी मुम्किन होगा जब हम दीन को समझेंगे। लड़की के वालिदैन इल्म वाले होंगे तो ही वो भी दीनदार दामाद को अपनी बेटी के रिश्ते के लिये तरजीह देंगे।
आओ हम मालदारी को मुक़द्दम नहीं दीनदारी को मुक़द्दम रख कर अपनी बेटियों के रिश्तों को जोड़ें।
इंशा अल्लाह कोई निकाह मुश्किल नहीं। होगा और कोई लड़की ज़्यादा उम्र तक अपने वालिदैन के घर नहीं बैठेगी।
अल्हम्दु लिल्लाह दीने इस्लाम ने निकाह में इस इस्लाम की मुक़द्दस शहजादी को कई जहतों से मुक़द्दम रखा है। महर की गर्ज़ औरत से निकाह, यहाँ महर की हक़दार औरत ही है।
क्या शान व मर्तबा औरत का दीने इस्लाम में, अल्लाह त'आला खुद फरमा रहा है :

अल क़ुरआन : औरतों को उनके महर खुशी से दो।

अब महर पे तज़्किरा करना बड़ा लम्बा होगा, बस मै एक बा शऊर दोशैज़ाहे इस्लाम को ये बताने की कोशिश कर रही हूँ कि देखो तुम क्या हो और तुम चाहो तो क्या से क्या कर सकती हो, अगर तुम्हारा गौरो फ़िक्र इस्लाम के लिये हो।

अब मै बेटी से बीवी और एक आज़ाद पंछी से ज़िम्मेदार बन गयी।

अल्लाह ने क़ुरआन में मर्दों को ताकीद की है :

अल क़ुरआन : और अच्छे सुलूक से औरतों के साथ ज़िन्दगी बसर करो।

अल क़ुरआन : औरतों को भी मर्दों पर ऐसे ही हुक़ूक़ हैं, जैसे मर्दों के औरतों पर अच्छे सुलूक के साथ।

यानी एक खुश हाल ज़िन्दगी की तक्मील के लिये शौहर बीवी को एक दूसरे को समझते हुये गुज़ारनी होगी।
एक ज़हन मै लड़के वालों को देना चाहती हूँ कि जब वो लड़की ढूँढने निकले तो भी पहली तरजीह लड़की की दीनदारी को दे। बस जितना दुनियावी इल्म हासिल किया ये काफ़ी नहीं है बल्कि लड़के के वालिदैन की भी सोच ये होनी चाहिये कि जो लड़की हमारे घर आयेगी तो वो इस घर को जन्नत का नमूना बनायेगी। अगर वो इस्लामी तालीमात से आरास्ता हो तो।
इस के लिये लड़के वाले लड़की वालों को ये ज़हन दें कि हमें दीनी तालीम मुक़द्दम है। आप अपनी बेटी को भी दीनी तालीम से आरास्ता करवायें ताकि

हमारे खानदान की नस्ल जिस गोद में परवान चढ़े वो एक बा अख्लाक़ कनीज़े फ़ातिमा हो।

कामियाब बीवी :

शौहर की ज़िंदगी के नसीबो फराज़ में सब्र शुक्र का पैकर बन कर शौहर के साथ उन हालात का सामना करने वाली हो।
क्योंकि ज़माने ने देखा है कि तालीमाते इस्लाम से मुज़य्यन एक लड़की ही एक कामियाब बीवी बनी है।

बीवी जो शौहर के दिल का सुकून है, आज ज़िंदगी का वबाल बन कर रह गयी है!
बात बात पे लड़ाई झगड़े!

एक-दूसरे के हुक़ूक़ की पामाली करते हुये नज़र आ रहे हैं।
बीवी अपने दुनियावी हुक़ूक़ के लिये आज कोर्ट कचहरियों तक चक्कर काट रही है!
बात कुछ भी नहीं होती बस दुनिया हासिल करने की दौड़ में वो एक दूसरे से मुक़ाबिला करने लग जाते हैं और बात तलाक़ तक पहुँच जाती है।
आज हम गौर करें तो पहले हम खुद से ही पूछें हम क्या चाहते हैं?
क्या हासिल करना है हमें?
एक कामियाब ज़िंदगी का लिबादा ओढ़ कर ज़िंदगी की गुमराहियों में कहीं खो तो नहीं रहे?

कामियाब ज़िंदगी के लिये एक बा-शऊर हमसफ़र चाहिये जो ज़िंदगी के हर मोड़ पर हमें साथ देने का अहसास दिला सके। इसीलिये शौहर पे बीवी के हुक़ूक़ हैं, ज़रूरिय्याते ज़िंदगी के तमाम मसाइल को वही उठा सके।
बीवी घर की ज़ीनत, औलादो माल की ज़ामिन है। वो रुपये पैसे कमा कर नहीं अपनी करोड़ों की मुहब्बतें लुटाते हुये हर नशीबो फ़राज़ में हमारे साथ खड़ी रहे और यही एक कामियाब बीवी होने की ज़मानत है।
यही कहूँगी कि बीवी वो है जो शौहर के लिये कामियाबी का समान मयस्सर करने में बहुत अहम किरदार अदा कर सकती है। अल्लाह ने औरत ही ऐसी चीज़ बनायी है जो मोम को पत्थर और पत्थर को मोम बना सकती है।
कहा गया है एक कामियाब मर्द के पीछे एक औरत का हाथ होता है।
इसीलिये हमारे अस्लाफ़ ने कहा है एक मर्द की तालीम एक फर्द की तालीम एक औरत की तालीम सारे खानदान की तालीम।

दीनी दुनियावी तालीम से आरास्ता बीवी आज क़ौमे मुस्लिम की ज़रूरत है क्योंकि आज मुसलमान अपने मक़ाम व वक़ार को खो चुका है।
अगर दोनो तालीमात से आरास्ता हों तो वो दीन की तालीम की महारत से आज पुरफितन दौर का मुक़ाबिला करने के लिये अपने शौहर को जगा सकेगी।
वो शौहर सिर्फ पैसा कमाने की मशीन बन गया था आज वो इस सोये हुये मर्दे मुजाहिद को क़ौमो मिल्लत का रहनुमा बना सकेगी।
आज क़ौम की मुजाहिदा की ज़रूरत है,
मर्दे मुजाहिद सिर्फ मैदाने कारज़ार में लड़ने वाले का नाम नहीं है, मर्दे मुजाहिद ज़िंदगी के हर शोबे में लड़ने वाले का नाम है।

तलवार सिर्फ कारज़ार में ही नहीं, इल्मी क़लामी ज़बानी अ़मली तलवार जो हर शोबे में चले आज बहुत ज़रूरी हो गयी है।

जागना होगा :

आज हम बस खुदगर्ज़ बन गये हैं, हमें आसानियाँ मयस्सर हैं बस हमें और क्या चाहिये?
दुनिया की हमें क्या पड़ी है और खाओ, पियो, ऐश करो!
आज हम अपने घर तक ही महदूद हो कर रह गये हैं!
हमें क़ौमो मिल्लत का दर्द नहीं बस अपने बीवी बच्चों की ही फ़िक्र है!

नहीं नहीं अगर हम आज नहीं जागेंगे तो बहुत देर हो जायेगी लेकिन लगता है कि पहले ही बहुत देर हो गयी है।
आज का नौजवान बहुत गफलत में जी रहा है।
बस एक घर, गाड़ी, बीवी हो गयी ज़िंदगी कामियाब।
अब हमें अपनी सोच को वसी बनाने का वक़्त आ गया है।
जो जिस मैदान से वाबस्ता है वहीं से कोशिश की जाये, एक एक क़तरा समुंदर बन जायेगा।

इस के लिये एक फितरी सी बात है कि बीवी बहुत अहम रोल अदा कर सकती है।
देखा भी गया है कि मुआशरे में एक मामूली सा मसअला गैर ज़िम्मेदार इंसान की जब शादी करते हैं तो वो शादी के बाद ज़िम्मेदार बन जाता है। और अगर एक पढ़ा लिखा नौजवान, अल्लाह ने इसे बहुत सी सलाहिय्यतों का मालिक

बनाया है वो अपनी सलाहिय्यतें रोज़ी रोटी कमाने तक महदूद कर देता है। अगर इस नौजवान को बा सलाहिय्यतों वाली बीवी मिल गयी तो वो इस को आज हमारी ज़रूरत के मुताबिक़ ढालने की कोशिश करेगी। आज के नौजवान को बहुत अ़क़्ल व फहम से काम लेने की ज़रूरत है। लड़के का शौहर बन कर लड़की का बीवी बन कर अपनी इस्तिताअत से काम लेने का वक़्त आ गया है। हर क़ौम के नौजवान ये देखें कि हमारे अस्लाफ़ के बाद हमारे बाद दादा ने क्या किया? हम आने वाली नस्लों के लिये मिसाल कैसे बने?
और सहाबा और सहाबिय्यात के दर्द को महसूस करते हुये आओ कुछ कर गुज़रें.....,
सिर्फ माल वा दौलत कमा कर ज़िंदगी गुज़ार जाना ही कामियाबी नहीं है। आओ एक मुआशराती इन्क़िलाब बरपा कर के मुआशरे की बुराईयों को दूर करें।
जो बा-अख्लाक़ बीवी कम आमदनी में क़नाअत पसंद, मुश्किल में सब्र बनी खड़ी रहे। जिस की गोद में नस्ल परवान चढ़े वो एक बा सलाहिय्यत मोमिना होगी तो बच्चा भी एक बा सलाहिय्यत ही होगा।
बीवी कनीज़े फातिमा बनेगी तो ही बच्चा ज़माने के यज़ीदियों से मुक़ाबिला हुसैन बन कर करेगा।

एक औरत बा-हैसिय्यते माँ :

अल्हम्दु लिल्लाह इस्लाम ने औरत का मक़ाम व मर्तबा हर एक रूप में आला व बरतर रखा।

किया बेटी, किया बहन, किया बीवी, किया माँ....!
लफ्ज़े माँ जब सुनते हैं तो कानों में एक शहद सी मिठास घुलती हुई महसूस होती है।
बेटी रहमत, बहन गुरूर, बीवी सुकून व चैन ज़िंदगी की ज़ीनत.....,
माँ जन्नत रहमत नैमत रिफ्फत इज़्ज़त क्या-क्या अल्लाह की क़ुदरतों की अ़ता का मज्मूआ है अल्लाह और उस की अ़ता से उसका हबीब ही जाने।

अल क़ुरआन : अपनी जानों और अपने अहल को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन आदमी और पत्थर है।

जब ये आयत नाज़िल हुई तो सहाबा -ए- किराम खौफ़ से रोने लगे और अल्लाह के हबीब से पूछा कि हम कैसे इस आग से खुद को और अपने अहल को बचायें?
अल्लाह के हबीब ने फ़रमाया जिन बातों का अल्लाह और उस का हबीब तुम्हें हुक्म दें उस से बजा लाओ और जिन बातों से तुम्हें रोके तुम अपने आप को और अपने अहल को उन बातों से रोको यानी अहकामे इलाही बजा लाओ और हराम कामों से बचो।

अब किस तरह औलाद की तरबियत करना है, ये वालिदैन की मुनहसिर है।

अगर वालिदैन ही हाय-हैलो करने वाले मगरिबी तहज़ीब याफ्ता हों और बच्चे से फ़रमाबरदारी की तवक़्क़ो करें तो बहुत कम अ़क़्ली होगी।

हमें वालिदैन खास कर माँ जो कि सारे दिन बच्चा माँ का ही मुशाहिदा करता रहता है और माँ के फ़ैल, अ़मल व क़ौल से बहुत जल्द मानूस होता है, हर माँ के मा-तहत ही औलाद की तरबिय्यत है।
इसलिये इरशादे नबी -ए- करीम ﷺ है :
"जिन के मा-तहत में जो लोग हैं उनके मुतल्लिक़ क़यामत में सवाल होगा।"

अब बच्चे भी वालिदैन के मा-तहत ही हैं, इस में माँ का अहम किरदार है।
माँ की ज़िम्मेदारी है कि बच्चे को इल्मे दीन की तरफ मरकूज़ करे, आसानी से जैसे भी हो, ईमान की तरबिय्यत करती रहे। जब भी खुद इबादत करती हो उस वक़्त बच्चे को साथ ले ले।
नमाज़ ता तिलावत करते वक़्त बच्चे को पढ़ने की तरफ रगबत दिलाये।
जैसे-जैसे बच्चे की उम्र बढ़ने लगे तो अलग अलग तरीक़ों से उस की दीन की तरफ रगबत को बढ़ाते रहे ताकि आगे उसे अपने अस्लाफ (बुज़ुर्गों) की जद्दो जहद का दर्द महसूस होता रहे।

कभी हक़ की लड़ाई के लिये इसे कुछ करना हो तो उसे थोड़ा भी सोचना ना पड़े। माँ ये भी मुसम्मम इरादा करे कि मेरी गोद में जो औलाद पल रही है ये मामूली औलाद नहीं है बल्कि इस के ज़रिये दीन के बहुत से काम होने हैं।
ये बच्चे इस क़ौमे मुस्लिक की मिल्कियय्त हैं, इन पर दीनो मिल्लत की बहुत सारी ज़िम्मेदारियाँ हैं।
आप ने तारीख का मुताला किया हो तो दीने हक़ की इशाअत के लिये इस्लाम की बेटियों ने अपने जिगरगोशों को किस तरह दीन के लिये निसार किया है बल्कि वाज़ेह है।

हर इस्लामी माँ अपने ऊपर ये जिम्मेदारी समझे कि मेरी गोद में पलने वाली औलाद मामूली नहीं बल्कि दीनो मिल्लत की उस पर ज़िम्मेदारी है। इसे एक ऐसी हस्ती बनाना है जो तारीख को पलट दे। जो मक़ाम व मर्तबा इस्लाम की इब्तिदा में था आज मेरी तरबिय्यत औलाद के लिये और औलाद की कोशिश दीन के लिये कारगर साबित हो।
हर माँ ये ज़हन बना ले तो फिर से वही इस्लाम का चमन लहलहाता हुआ नज़र आयेगा। इंशा अल्लाह

माँ चाहे तो बहुत कुछ कर सकती है लेकिन नहीं, उस औलाद को एक पटाखे की आवाज़ से बचाती फिरती है तो वो क्या दीन की खिदमत के लिये उसे निसार करेगी?

हदीस : माँ के क़दमों के नीचे जन्नत है।

बेशक अल्लाह के हबीब के सदक़े, अल्लाह ने एक माँ को वो मर्तबा दिया है पर क्या ये हदीस बच्चे को सुनाते ही रहेंगे या इस को वो जन्नत के रास्ते पर चलने के लिये आसानियाँ भी पैदा करेंगे?
बच्चे की ईमानी तरबिय्यत अख्लाक़ी तरबिय्यत और फिक्री तरबिय्यत करनी होगी, जब तक माँ बच्चे को अल्लाह और उस के हबीब का उम्मती बनने नें उस की मदद नहीं करेगी तो ये उम्मीद छोड़ दे कि वो बच्चा इस का फ़रमाबरदार बनेगा, एक बच्चा जिस को हुक़ूक़ुल्लाह की पहचान होगी वो बच्चा हुक़ूक़ुल इबाद की भी अदायगी अच्छी तरह करेगा।

बेहतर है कि अपनी औलाद में मुआशरे के अंदर फैली बुराईयों को दूर करने वाली सलाहिय्यात पैदा की जायें।
और इस में अहम रोल एक माँ अदा कर सकती है शायद ही कोइ और अदा कर सकता हो।

अल्लाह ने औलाद की नेमत से नवाज़ा है तो उस औलाद के हक़ को अदा करने वाला भी बनाये। आमीन

बातें बहुत हैं करने को पर काश कि इतनी बातें ही दिल में उतर जायें तो काफी हो और हमारे लिये ज़रिया -ए- नजात बन जाये।

तालिबे दुआ
कनीज़े अख्तर

OUR OTHER PAMPHLETS

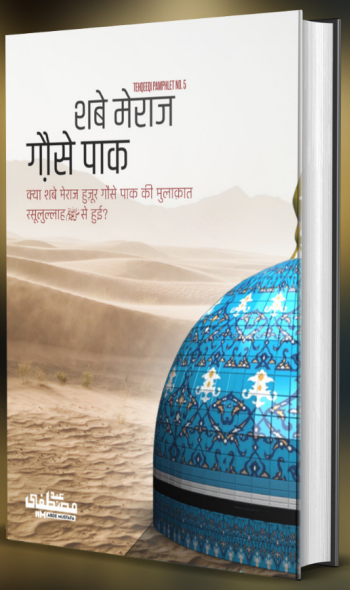

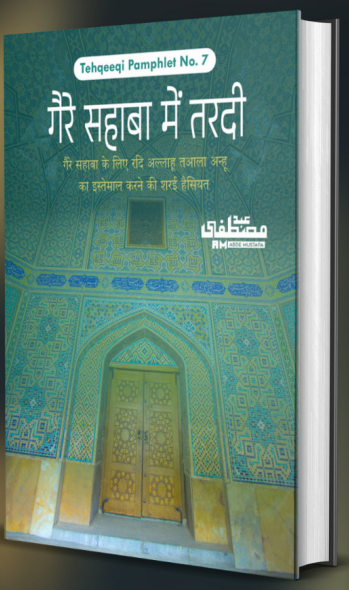

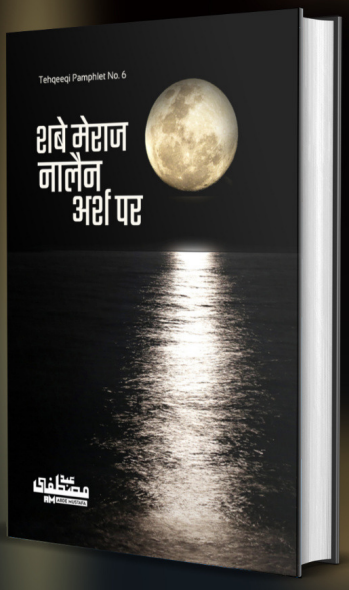

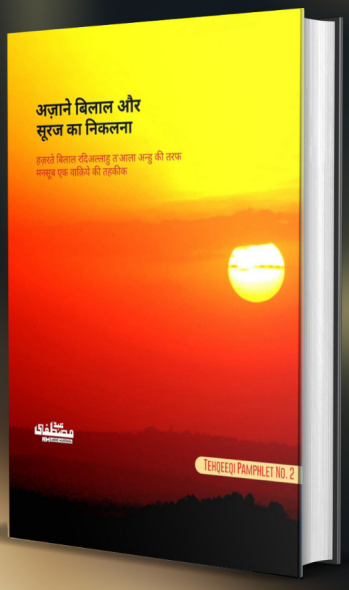

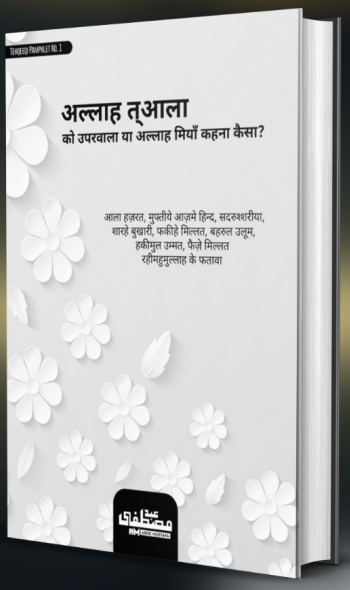

ABDE MUSTAFA OFFICIAL